की ख़बर पाकर, सती होने के लिये उसी जगः पर आई. चिता बनवा, उस में बैठ, उस चोर को सूली से उतार, उस का सिर गोद में रख, जलने को बैठी चाहे कि उसमें आग दिलवावे, इत्तिफ़ाक़न, वहां एक देवी का मंदिर था, उसमें से तुरन्त देवी निकलकर बोली ऐ पुत्री! मैं तुष्ट ऊई तेरे साहस पर; तू बर मांग. वह बोली माता जो तू मुझसे तुष्ट ऊई है, तो इस चोर को जीदान दे. फिर देवी बोली इसी तरह से होवेगा. यह कह, पताल से अम्रत ला चोर को जिला दिया.

इतनी कथा कह, बैताल ने पूछा ऐ राजा! बताओ कि चोर पहले किस कारन हंसा, और पीछे किस लिये रोया. राजा ने कहा जिस वास्ते हंसा वह बाइस मैं जानता हूं. और जिस लिये रोया वहभी मुझे मअलूम है. सुन बैताल! चोर ने जीमें बिचारा, यह जो मेरे वास्ते अपना सर्वस राजा को देती है, अब इसका मैं क्या उपकार करूंगा. यह समझकर वह रोया. फिर अपने मनमें बिचारा कि मरने के समैं उसने मुझ से प्रीति की. भगवान की गति कुछ जानी नहीं जाती. कुलछने को दे लछमी; कुलहीन को देवे बिद्या; मूरख को दे सुंदर स्त्री; पहाड़ पर बरसावे बरषा. ऐसी ऐसी बातें सोचकर हंसा. यह सुन, बैताल फिर उसी पेड़ पर जा लटका. राजा फिर वहां गया; और उसे खोल, गठरी बांध, कांधे पर रख, ले चला.

चौदहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! कुसमावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का सुबिचार नाम राजा. जिसकी बेटी का नाम चद्रप्रभा. जब वह बरयोग ऊई, तब एक दिन, बसंत ऋतु में, सखियों को साथ ले, बाग़ की सैर को चली. वहाँ ज़नाने के बंदोबस्त से पहले, एक ब्राह्मण का लड़का, बरस बीस एक का, अति सुन्दर, मनस्वी नाम कहीं से फिरता ऊआ, उस बाग़ में आ, एक वृक्ष के नीचे ठंडी छांह पाकर सो रहा था. राजा के लोगों ने आ, उस बाड़ी में ज़नाने का बंदोबस्त किया. पर इत्तिफ़ाक़न, उस बह्मनेटे को किसी ने न देखा. और वह उस दरख़्त के नीचे सोता रहा. और राजकन्या अपने लोगों समेत बाग़ में दाख़िल ऊई. सहेलियों के साथ सैर औ तमाशा देखती ऊई कहां आती है कि जहां वह बह्मनेटा सोता था. इस का वहां पहुंचना, कि वह भी लोगों के पांव के आहट से उठ बैटा. दोनों की चार नज़रें ऊईं; और कामदेव के ऐसे बस ऊए, कि उधर ब्राह्मण का लड़का मूरछा खा भूमि पर गिरा; इधर बेसुध हो राजकन्या के पांव कांपने लगे. पर वोंहीं उसे सखियों ने हाथों हाथ थाम लिया. निदान, चंडोल में लिटा घर को ले आईं. और यहां ब्राह्मण का लड़का ऐसा बेसुध पड़ा था, कि अपने तन मन की कुछ ख़बर न रखता था.

(१) कुसुमवती.

इस अरसे में दो ब्राह्मण, शशी और मूलदेव नाम कांवरू(१) देस से विद्या पढ़े ऊए वहां आ निकले. मूलदेव ने उस ब्राह्मण के लड़के को पड़ा देखकर कहा ऐ शशी! ऐसा बेसुध यह क्यौं पड़ा है. वह बोला नायकाने भौं की कमान से नैन के तीर मारे हैं; इससे यह बेसुध पड़ा है. मूलदेव ने कहा इसे उठाया चाहिये. उसने कहा तुम्हें उठाने से क्या दरकार है. उसने शशी का कहना न माना, और उसे पानी छिड़क कर उठाया; और पूछा कि तेरी क्या दसा ऊई है? वह ब्राह्मण बोला दुख उसे कहिये जो दुख को दूर करे. और जो सुनके दूर न कर सकें उसे कहना क्या हासिल. वह बोला अच्छा तू अपनी पीर हमारे आगे कह; हम दूर करेंगे.

यह सुनके वह बोला कि अभी राजकन्या सखियों को साथ लिये आई थी. सो उसके देखने से मेरी यह गति ऊई है. जो वह मिलेगी तो मैं अपना जीव रक्खूंगा; नहीं तो प्रान तजूंगा. तब वह बोला हमारे स्थान पर चल. उसके मिलने का हम यत्न कर देंगे; और नहीं तो तुझे बऊतसा धन देंगे. तब मनस्वी बोला कि संसार में भगवान ने बऊत रत्न पैदा किये हैं. पर स्त्रीरत्न सब से उत्तम है. और उसी के लिये मनुष धन की इच्छा करते हैं. जब नारी को त्यागा तो धन लेके क्या करेंगे. जिन को हसीन औरत मुयस्सर न हो उन से संसार में पशु भले हैं. धर्म का फल है धन; और धन का फल है सुख; और

(१) कामरूप.

सुख का फल है नारी; और जहां नारी नहीं सहां सख कहां. यह सुनके मूलदेव बोला जो तू मांगेगा सो दूंगा. तब उस ने कहा ऐ ब्राह्मण! मुझे वोही कन्या दिला दे. फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू हमारे साथ चल. तुझे वोही कन्या दिला देंगे.

गरज़, बऊत सी तसल्ली कर उसे अपने घर ले गया. और वहां जाकर दो गुटके बनाये. एक गुटका उस ब्राह्मण को देकर कहा, जब इसे मुंह में रक्खेगा, तब तू बारह बरस की कन्या हो जायगा. और जिस वक्त तू इसे मुंह से निकाल लेगा, तो पुरुष ज्योंका त्यों हो जायगा. और कहा तू इसे अपने मुख में रख. उस ने जो अपने मुख में रक्खा तो बारह बरस की कन्या हो गया. और दूसरे गुटके को जो इसने मुख में रक्खा तो आप अस्सी बरस का डोकरा बन गया; और उस कन्या को लिये ऊए राजा के यहां गया.

राजा ने ब्राह्मण को देख, दंडवत कर, आसन बैठने को दिया; और एक आसन उस लड़की को भी. तब ब्राह्मण नें एक श्लोक पढ़ असीस दी; कि जिसकी शोभा त्रिलोकी में फैल रही है; और जिन्ने बौना हो बलि को छला; और जिनने बंदर साथ ले समुद्र का पुल बांधा; और जिन्ने, पर्वत हाथ पर रख, इंद्र के बजर से गवाल बाल बचाये; सोही वासुदेव तुम्हारी रक्षा करे. यह सुनकर, राजा ने पूछा महाराज! आप कहां से पधारे. मूलदेव ब्राह्मण बोला कि गंगापार से मैं आया हूं. और

वहीं मेरा घर है. और मैं अपने बेटे की बहू को लेने गया था. पीछे मेरे गांव में भागड़ पड़ी. सो मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र भाग कहां गये. और अब मैं इस को साथ लिये फिरूं उन्हें किस तरह ढूंढूंगा. इससे बिहतर यह है, कि आप के पास इसे छोड़ जाता हूं. जबतक कि मैं न आऊं तबतक इसे यत्न से रखना.

यह बात ब्राह्मण की सुन, राजा अपने चित में चिन्ता करने लगा कि अति सुंदर तरुन स्त्री को मैं किस तरह रक्खूं. और जो नहीं रखता तो यह ब्राह्मण सराप देगा. मेरा राज भंग हो जायगा. यह अपने जी में राजा बिचारकर बोला महाराज! जो आपने आज्ञा की क़बूल है. फिर राजा ने अपनी पुत्री को बुलाकर कहा बेटी! इस ब्राह्मण की बहू को अपने पास ले जाके बहुत यत्न से रक्खो; और सोते, जागते, खाते, पीते, चलते, फिरते छिनभर इसे अपने पास से जुदा मत कीजो. यह सुन, राजकन्या, उस ब्राह्मण की बहू का कर धर, अपने मंदिर में ले गई. रात के समैं दोनों एक सेज पर सोईं और आपस में बातें करने लगीं. बातें करते करते ब्राह्मण की बहू बोली कि ऐ राजकन्या! तू किस दुखके मारे अति दुरबल हो रही है; सो मुझ से कह.

राजपुत्री बोली, एक दिन बसंत ऋतु में, सखियों को साथ ले, मैं बाग़ की सैर को गई थी. और वहां एक ब्राह्मण अति सुन्दर कामदेव के समान मैं ने देखा. और उस की मेरी चार नज़रें हुईं. उधर वह बेहोश हुआ;

और इधर मैं बेसुध हुई. तब सखियां, मेरी अवस्था देख, घर को ले आईं. और उसका नांव ठांव मैं कुछ नहीं जानती. मेरी आंखों में उसकी सूरत समा रही है. और मुझे खाने पीने की भी कुछ रुच नहीं. इसी पीर से मेरे शरीर की यह दसा हुई है. यह सुनके वह ब्राह्मण की बहू बोली जो तेरे प्रीतम को तुझ से मिला दूं तो तू मुझे क्या दे. राजकन्या बोली कि सदा तेरी दासी हो रहूंगी. यह सुनके, वह गुटका अपने मुख से निकाल फिर पुरुष हो गया. और यह उसे देखके शरमाई. फिर उस ब्राह्मण के लड़के ने, गंधर्व बिवाह की रीत से, उसके साथ अपना ब्याह किया. और हमेशः उसी तरह रात को मर्द होता और दिन को रंडी बना रहता. निदान छः महीने पीछे राजकन्या को गर्भ रहा.

एक दिन का ज़िक्र है, कि राजा, सारे कुटुंब को साथ लेकर, दीवान के घर शादी में गया. वहां मंची के बेटे ने उस स्त्रीभेषधारी ब्राह्मण के लड़के को देखा. देखते ही आशिक़ हो गया; और अपने एक मित्र के आगे कहने लगा, जो यह नारी मुझे न मिलेगी तो मैं अपना प्राण तजूंगा. इस अरसे में, राजा न्योता खा कुनबे समेत अपने मंदिर को आया. पर मंची के पूत की, उसके बिरह की डाह से, निपट कठिन अवस्था हुई; और अन्न पानी छोड़ दिया. यह गति देख, उसके मित्र ने जा मंची से कहा. और दीवान ने, यह अहवाल सुन, जा राजा से कहा महाराज! उस ब्राह्मण की बहू की प्रीति में मेरे

बेटे की बुरी हालत है. खाना पीना छोड़ दिया है. जो आप कृपा करके ब्राह्मण की बहू को मुझे देवें तो उसकी जान बचे.

यह सुन राजा क्रोध कर बोला अरे मूर्ख! ऐसी अनीति करना राजाओं का धर्म नहीं है. सुन तो एक मनुष्य की थाती हो और बिना आज्ञा उसकी दूसरे को देना उचित है जो तू मुझ से यह बात कहता है. यह सुनके प्रधान निराश हो अपने घर को आया. पर उस लड़के का दुख देखकर उन्ने भी अन्न जल छोड़ दिया. जब कि तीन दिन दीवान को बिन दाने पानी के गुज़रे; तब तो सब कारबारियों ने इकठे होकर राजा से अर्ज़ की महाराज! मंची का पुत्र अब तब हो रहा है. और उसके मरने से दीवान भी न बचेगा. और दीवान के मरने से राजकाज न चलेगा. बिहतर यह है कि जो हम अर्ज़ करें सो क़बूल हो. यह सुनके, राजा ने आज्ञा दी कि कहो. तब उनमें से एक शख़्स बोला महाराज! उस बूढ़े ब्राह्मण को गये हुए बहुत दिन हुए, कि फिरा नहीं. भगवान जाने मर गया, या जीता है. इससे उचित यह है, कि उस ब्राह्मण की बहू को मंची के बेटे को दे अपना राज क़ाइम रखिये. और कदाचित वह आया तो गांव धन दीजेगा. अगर इस पर राज़ी न होगा तो उसके लड़के का ब्याहकर बिदा कीजेगा.

यह बात सुन राजा ने उस ब्राह्मण की बहू को बुलाकर कहा तू मेरे मंची के पुत्र के घर जा. वह बोली कि

स्त्री का धर्म नष्ट होता है अतिरूप पाके; और ब्राह्मण का धरम जाता है राजा की सेवा करने से; और गाय ख़राब होती है दूर की चराई से; और धन जाता है अधर्म पाने से. इतना कह फिर बोली जो महाराज! तुम मुझे मंची के बेटे को देते हो तो उससे यह बात ठहरा दीजिये, कि जो कुछ उससे मैं कहूं सो वह करे. तब मैं उसके घर जाऊंगी. राजा बोला कह कि वह क्या करे. उन्ने कहा महाराज! मैं ब्राह्मणी; और वह चची. इससे बिहतर यह है कि वह पहले सब तीर्थ यात्रा कर आवे; तब मैं उसके साथ घर करूं.

यह बात सुनके, राजा ने मंची के बेटे को बुलाकर कहा पहले तू तीर्थ यात्रा कर आ; तब उस ब्राह्मणी को तुझे देवेंगे. राजा की बात सुन दीवान के बेटे ने कहा महाराज! वह मेरे घर जा बैठे, तो मैं तीर्थ को जाऊं. यह बात सुन, राजा ने उस ब्राह्मणी से कहा, जो तुम पहले उसके घर में जाके रहो तो वह तीर्थयात्रा को जाय. लाचार हो राजा के कहने से, ब्राह्मणी उसके घर में जा रही. तब प्रधान के पुत्र ने अपनी नारी से कहा तुम दोनों निहायत प्यार इख़लास से बाहम एकजा रहना; और आपस में किसी तरह का झगड़ा लड़ाई न करना; और बिराने घर कभी न जाना.

इतनी सीख दे, वह तो तीर्थ यात्रा को गया. और इधर उसकी बहू, सौभाग्यसुन्दरी नाम, ब्राह्मण की बहू को अपने साथ ले, एक बिछौने पर रात को लेटी हुई

वातें इधर उधर की करने लगी. कितनी एक देर के बअ़्द, उस दीवान के पुत्र की बहू ने यह बात कही ऐ सखी! इस वक़्त तो मैं इश्क़ से जली जाती हूं. पर मतलब मेरा किस तौर से हासिल हो. दूसरी बोली कि अगर तेरे मतलब को मैं बरलाऊं, तो तू मुझे क्या दे. उसने कहा सदा तेरे आगे हाथ जोड़े आज्ञाकारी रहूं. तब यह अपने मुखसे गुटके को निकाल, पुरुष बन गया. हमेशः इसी तरह रात को मर्द बनता, और दिन को रंडी. फिर तो इन दोनों में बड़ी प्रीति हुई.

गरज़, इसी तरह से छः महीने बीते. और मंत्री का पुत्र आ पहुंचा. उधर लोग, उस के आने की ख़बर सुन, मंगलाचार करने लगे. और इधर ब्राह्मण की बहू ने, गुटका मुख से निकाल, मर्द बन, खिड़की की राह महल से निकल, अपनी राह ली. फिर कितनी एक देर में उस मूलदेव ब्राह्मण के पास पहुंचा, कि जिस ने इसे गुटका दिया था; और उस से सब अपनी आदि अंत की अवस्था कही. तब मूलदेव ने तमाम अहवाल सुनकर, गुटका इससे ले, अपने साथी शशी नाम ब्राह्मण को दिया. और दोनों ने गुटके अपने अपने मुख में रख लिये. एक बूढ़ा बनगया. और दूसरा बीस बरष का. फिर ये दोनों राजा के यहां गये.

राजा ने देखतेही दंडवत कर, इनके बैठने को आसन दिये. और इन्हों ने भी असीसें दीं. राजा ने, इनकी कुशल क्षेम पूछ, मूलदेव से कहा कि इतने दिन तुम्हें कहां

लगे. ब्राह्मण बोला महाराज! इसी पुत्र के ढूंढने को गया था. सो उसे खोजकर आप के पास ले आया हूं. अब इस की बहू को दो तो मैं बहू बेटे को अपने घर ले जाऊं. तब राजा ने ब्राह्मण के आगे वह सब वृत्तान्त कह सुनाया. ब्राह्मण ने सुनते ही अति कोपकर राजा से कहा यह कौन सा ब्योहार है, जो तुम ने मेरे बेटे की बहू और को दी. अच्छा जो तुम ने चाहा सो किया. पर अब मेरा सराप लो. तब राजा बोला कि हे देवता! तुम क्रोध मत करो. जो तुम कहो सो मैं करूं. ब्राह्मण बोला अच्छा जो तू मेरे सराप से डरकर मेरा कहा करता है तो तू अपनी पुत्री मेरे लड़के को ब्याह दे. यह सुन राजा ने एक ज्योतषी को बुला, शुभ लग्न मुहूर्त ठहराय, अपनी पुत्री उस ब्राह्मणके लड़के से बियाह दी. फिर यह वहां से राजकन्या को, दान जहेज़ समेत, ले राजा से बिदा हो अपने गांव में आया.

यह ख़बर सुन, वह मनस्वी ब्राह्मण भी वहां आ उससे झगड़ने लगा कि मेरी स्त्री मुझे दे. शशी नाम ब्राह्मण बोला कि मैं दस पंचों में ब्याहकर लाया हूं; यह स्त्री मेरी है. उस ने कहा कि इसे तो मेरा गर्भ रहा; तेरी किस तरह से यह नारी होगी. और आपस में बिवाद करने लगे. मूलदेव ने इन दोनों को बहुत समझाया. लेकिन किसूने उसका कहना न माना.

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत! कहो वह भार्या किस की हुई? राजा ने कहा

वह स्त्री शशी ब्राह्मण की ऊई. तब बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मण का; जोरू इस की किस तरह से ऊई? राजा ने कहा कि उस ब्राह्मण का पेट रखवाया ऊआ तो किसूने मअ्लूम न किया. और इन्ने दस पचों में बैठके शादी की. इस लिये इस की जोरू ठहरी. और वह लड़का भी इसी की क्रिया कर्म का अधिकारी होगा. यह बात सुन, बैताल उसी रूख में जा लटका. फिर राजा गया; और बैताल को बांध, कांधे पर रख, ले चला.

पंदरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! हिमाचल नाम एक पर्वत है. तहां गंधर्व का नगर है. और वहां का राज राजा जीमूतकेतु करता था. एक समें उसने पुत्र के अर्थ कल्पवृक्ष की बऊतसी पूजा की. तब कल्पवृक्ष खुश हो बोला ऐ राजा! तेरी सेवा देख मैं संतुष्ट ऊआ; जो तू चाहे सो बर मांग. राजा ने कहा कि एक पुत्र मुझे दो जो मेरा राज और नाम रहै. उन्ने कहा ऐसाही होगा.

कितने दिनों के बअ्द, राजा के बेटा ऊआ. उसे निहायत खुशी ऊई; और बड़ी धूम से शादी की. बऊत सा दान पुन्य कर, ब्राह्मणों को बुला, उस का नाम करन

किया. ब्राह्मणों ने उस का नाम जीमूतबाहन(१) धरा. जब कि वह बारह बरस का ऊआ, तब शिव की पूजा करने लगा; और सब शास्त्र पढके बड़ाई ज्ञानी, ध्यानी, साहसी, सूरबीर, धर्मात्मा, पंडित ऊआ. उस समें उसकी बराबर कोई न था. और जितने उस के राज में लोग थे, वे सब अपने अपने धर्म में सावधान थे.

जब वह जवान ऊआ तो उन्ने भी कल्पवृक्ष की बऊत सेवा की. तब कल्पवृक्ष ने प्रसन्न हो उससे कहा जिस बात की तुझे इच्छा हो सो मांग, मैं तुझे दूंगा. फिर जीमूतबाहन बोला जो तुम मुझसे प्रसन्न ऊए हो तो मेरी सब रएयत का दरिद्र दूर करो; और जितने लोग मेरे राज में हैं सब माल और दौलत से बराबर हो जावें. तब कल्पवृक्ष ने बर दिया. सब लोग धन से ऐसे आसूदः ऊए कि कोई किसी का ऊकम न मानता था, और कोई किसी का काम न करता.

जब उस राज के लोग ऐसे हो गये, तब जो भाई बंध उस राजा के थे, वे आपस में बिचार करने लगे कि बाप बेटे तो दोनों धर्म के बस ऊए; और लोग इन का ऊकम नहीं मानते. इससे उत्तम यह है, कि इन दोनों को पकड़के कैद कीजिये, और राज इन का छीन लीजिये. ग़रज़, राजा तो उन्हों की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहा. और उन्हों ने, आपस में मनसूबः बांध, फ़ौज ले, राजा का मंदिर जा घेरा.

---

(१) जीमूतवाहन.